11 August, 1986

लोक सभा वाद–विवाद

का

हिन्दी संस्करण

PARLIAMENT LIBRARY
Acc. No. 58
Date 3/8/87

(आठवीं लोक सभा)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

विषय-सूची

अष्टम माला, खंड 19 छठा सत्र, 1986/1908 (शक)

अंक 18, सोमवार, 11 अगस्त, 1986/20 श्रावण, 1908 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	1-2

लोक सभा

सोमवार, 11 अगस्त, 1986/20 श्रावण, 1908 (शक)

लोकसभा 11 बजे समवेत हुई ;

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन सम्बन्धी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आज हम भारत के एक बहादुर सपूत भूतपूर्व थलसेना अध्यक्ष जनरल ए. एस. वैद्य की कुछ कायरों और देशद्रोहियों द्वारा की गई दुःखद हत्या पर शोक व्यक्त करने के लिए एकत्रित हुए हैं। मुझे आशा है और मैं यह भलीभांति जानता हूं कि न केवल यह सभा बल्कि सारा देश इस समय शोकग्रस्त और क्षुब्ध है। इस घृणित कार्य का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। एक सिपाही तो सिपाही ही होता है । वह अपने देश के प्रति समर्पित होता है। उसका कार्य तो केवल आदेशों का पालन करना होता है । देश की एकता, सार्वभौमिकता और स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका पहला कर्त्तव्य होता है। जब कभी भी कोई अवसर आया, चाहे वह बंगला-देश का युद्ध था या कोई और मामला, जहां कहीं भी और जब कभी जनरल वैद्य को बुलाया गया वह पीछे नहीं हटे। उन्होंने उसका बहादुरी से मुकाबला किया। वह और भी ऐसे किसी आक्रमण का बहादुरी से मुकाबला करते यदि उनकी पीठ में कायरतापूर्वक छुरा न घोंपा जाता। सारा सदन इसकी निन्दा करता है और यह आशा करता है कि इस मुसीबत की घड़ी में हम एकजुट होकर रहें और इन धमकियों का मुकाबला करें। इससे हमारे संकल्प और हमारे दृढ़ निश्चय में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आयेगी।

राष्ट्र के जीवनचक्र में कई घटनायें घटित होती हैं । जीवन जीवन ही न रहे यदि कोई सुख दुख न हो। किसी के लिए जीवन कोई सरल चीज नहीं है, चाहे वह मानव जीवन ही क्यों न हो फिर राष्ट्र के बारे में तो कहना ही क्या । परन्तु यह बात हमें समृद्ध भविष्य, सुखद भविष्य की ओर बढ़ने से विचलित नहीं कर सकती ।

राष्ट्र को हुई इस दुखःद हानि पर शोक व्यक्त करते हुए हम देश में उन आतंकवादियों तथा विध्वंसकारी शक्तियों का मुकाबला करने का संकल्प करते है जो हमारे देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करने के लिए तुली हुई है। इस बारे में कोई प्रश्न नही उठाया जाना चाहिए। हमें अपना संरक्षण स्वयं ही करना होगा। लोगों की भावनायें होती हैं। जब ऐसी घटनायें होती हैं तो भावनाओं का भड़कना स्वाभाविक है। परन्तु भावनाओं को नियंत्रण में रखना हमारा और राष्ट्र का कर्तव्य है। यह भावोत्तेजना राष्ट्र के हित में नहीं है। और भावनाओं को भड़कने देना उन ताकतों के हाथों में खेलना होगा। वे इन शरारतपूर्ण कार्यों से इसी उद्देश्य को प्राप्त करना

चाहते हैं। वे भड़काने वाले एजेन्ट हैं, विदेशी शक्तियों के एजेन्ट हैं और वे देशद्रोह पैदा कर रहे हैं। हमारा देश स्वतन्त्रता प्रेमी देश है। हमारे यहां सबको स्वतन्त्रता का अधिकार है तथा लोग स्वतन्त्रता से तथा अपनी इच्छा से जो भी कानून चाहें बदल सकते हैं, परन्तु बंदूक की गोली से नहीं। इसकी अनुमति नहीं दी जायेगी।

जनरल वैद्य एक बहुत ही कुशल सिपाही थे। उन्होंने अनेकों विशिष्ट कार्य किए हैं। वह थल सेना के, जिसमें उन्होंने 41 वर्ष तक बहुत ही अच्छी सेवा की। एक बहुत ही अधिक सम्मानित अधिकारी थे। जनरल वैद्य को 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध के लिए महावीर चक्र से विभूषित किया गया था। 1971 में उन्हें पुनः महावीर चक्र प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें 1970 और 1983 में विशिष्ट सेवा के लिये परम विशिष्ट सेवा पदक दिये गये थे। जनरल वैद्य एक बहुत ही अच्छे स्टाफ अधिकारी थे जिन्हें सिपाहियों का प्यार और आदर प्राप्त था। मुझे आशा है कि सशस्त्र सेनायें भी यही महसूस कर रही हैं और वह भविष्य में इस देश की गरिमा बनाये रखेंगी।

मुझे आशा है कि हमारे देशवासी इस समय उत्तेजित नहीं होंगे और एकजुट होकर रहेंगे। इस समय साम्प्रदायिक शांति और सौहार्द की आवश्यकता है ताकि हम राष्ट्र विरोधी तत्वों का सामना कर सकें। इस कार्य में हमें असफल नहीं होना है।

हम श्रीमती वैद्य और परिवार के अन्य सदस्यों को अपनी शोक संवेदनायें भेजते हैं। हम श्रीमती वैद्य के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना करते हैं।

हम उस शूरवीर सिपाही के सम्मान में कुछ देर मौन खड़े रहेंगे।

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा जनरल वैद्य के सम्मान में स्थगित होती है तथा कल सुबह 11 बजे पुनः समवेत होगी।

11.07 **म० पू०**

तत्पश्चात लोक सभा मंगलवार, 12 अगस्त, 1986/21 श्रावण, 1908 (शक) के ग्यारह बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई।

मुद्रक : ए० जे० प्रिन्टर्स, 5 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002